रहमत की अहमियत

पॉल-एमील लेजे की कथा

लेखन: डॉनेगन जॉनसन

चित्र: पिलेजी

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

रहमत की अहमियत

पॉल-एमील लेजे की कथा

लेखन: डॉनेगन जॉनसन

चित्र: पिलेजी

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

यह एक ऐसे शख़्स की कहानी है जिसने बचपन में ही यह तय कर लिया था कि वह अपनी ज़िन्दगी दूसरों की मदद में लगा देगा। वह हमेशा उदारता को राह दिखाने देगा। उनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का ज़िक्र अगले पन्नों में दिया गया है। अधिक सूचनाएं क़िताब के आखिरी पृष्ठ पर दी गई हैं।

एक समय की बात है...

आज से कई बरस पहले क्यूबेक, कनाडा के एक सुन्दर से गाँव सेंट एनिसेट में एक गहरी भूरी आँखों वाला नन्हा लड़का रहता था। उसका नाम था पॉल-एमील लेजे। पॉल-एमील को गाँव के गिरजे के घण्टाघर पर चढ़ बैठना अच्छा लगता था। वहाँ ऊपर बैठे-बैठे वह सेंट फ्रांसुआ झील के दूसरे छोर तक देख पाता था। वह घंटों दूर नज़र आते पहाड़ों को निहारा करता था।

"हैलो!" वह चीख कर कहता।

"हैलो! हैलो!" गूँज जवाब में कहती।

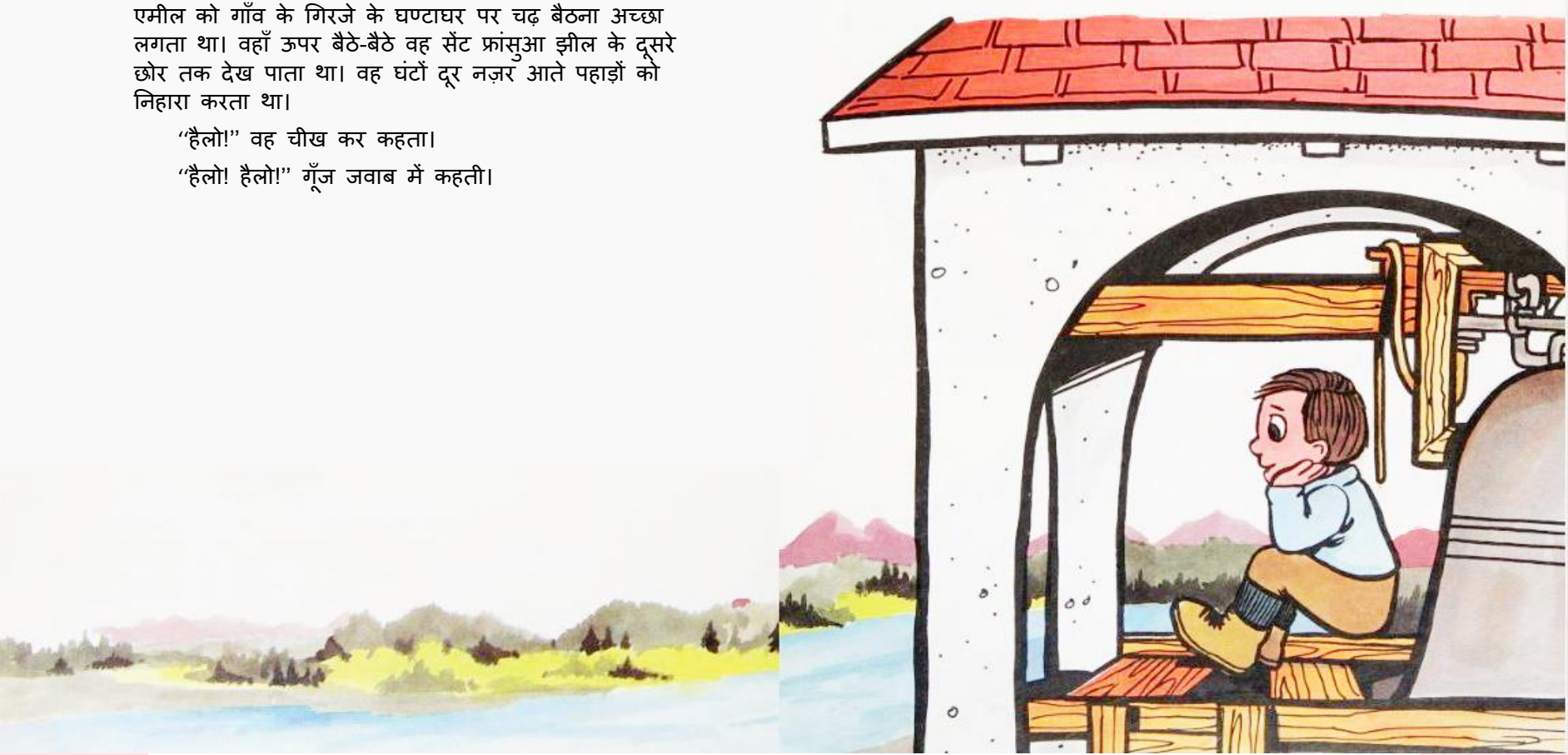

एक गर्म सपनीले दिन पॉल-एमील ने ख़ुद से एक वादा किया। "किसी दिन," उसने कहा, "मैं उन पहाड़ों के पार जाऊँगा। सोचता हूँ, दुनिया का चक्कर भी लगाऊँगा।" इतने में उसे अपने कंधे पर एक हल्की छुअन महसूस हुई।

"ओह पोपोल!" पॉल-एमील बोला, "तुम हो।"

बेशक, मैं ही हूँ," पोपोल ने जवाब दिया। "तुम्हारा रखवाला फ़रिश्ता। क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम अपना काफ़ी समय सपने देखने में गुज़ार चुके हो?"

"मैं सपने थोड़े ही देख रहा था," पॉल-एमील ने ऐतराज़ किया। "मैं तो भविष्य की योजना बना रहा था। कम-से-कम तुम्हें तो यह समझना चाहिए आख़िर तुम मेरे हमराज़ हो।"

"हो सकता है," फ़रिश्ते ने कहा, "पर तुम भूल रहे हो कि तुम्हारे पिता को दुकान में तुम्हारी मदद की ज़रूरत है।"

"सही कहा," लड़के ने हड़बड़ाते हुए कहा। "चलो, चलते हैं।"

पॉल-एमील ख़ुश था कि पोपोल ने उसे उसकी ज़िम्मेदारी याद दिलाई थी।

वह जानता था कि फ़रिश्ते इन्सानी आवाज़ में नहीं बोलते। यह भी कि जब वह पोपोल की आवाज़ सुनता, तो दरअसल वह अपनी अन्तरआत्मा को ही सुन रहा होता था। "फिर भी," पॉल-एमील ने सोचा, "जब से मैंने पोपोल से बातचीत शुरू की है मैं ख़ुद को बेहतर समझ पाता हूँ।"

पॉल-एमील के पिता की गाँव में एक किराने की दुकान थी। दुकान घाट के ठीक सामने थी, जहाँ बड़े जहाज़ों से गाँव की ज़रूरत का सामान उतारा जाता था। मिस्टर लेजे हट्टे-कट्टे थे। वे घाट से भारी खोखे-पेटियाँ उठा दुकान के पिछवाड़े तक ले आते। पॉल-एमील पहले उन्हें खोलता, तब आलों पर अण्डे, चीनी, गुड़ जमा देता। अपने माँ-बाप की मदद कर उसे खुशी होती, नाज़ होता।

"जब तुम बड़े हो जाओगे," एक दिन मिस्टर लेजे ने अपने बेटे से कहा, "यह सब तुम्हारा होगा। यह तुम्हारी दुकान होगी।"

पॉल-एमील को समझ ही नहीं आया कि वह क्या कहे। वह पिता से बेहद प्यार करता था और उनका दिल दुखाना नहीं चाहता था। "शुक्रिया पापा," वह बुदबुदाया। "पर..."

मिस्टर लेजे ने ग़ौर किया कि पॉल-एमील उलझन में है। उन्होंने बेटे के कंधे पर हाथ धरा। "तुम्हें कुछ परेशान कर रहा है क्या बेटे? क्या मुझे कुछ बताना चाहते हो?"

"दरअसल मैं बड़ा हो कर पादरी बनना चाहता हूँ," पॉल-एमील ने कह ही डाला, "एक मिशनरी!"

"यह उम्मीद तो बड़ी उम्दा है," पिता बोले। "पर पता है एक मिशनरी बनने के लिए तुम्हें बहुत बहादुर बनना होगा। तुम्हें अपनी माँ, मुझे और अपने सारे दोस्तों को छोड़ना होगा। अपने देश से बहुत दूर जाना होगा।"

"जी, मैं जानता हूँ। पर मैंने एक क़िताब में पढ़ा था कि ऐसे भी देश हैं जहाँ ढ़ेरों नन्हों के मा-बाप नहीं हैं। वे इसलिए अक्सर बीमार पड़ जाते हैं क्योंकि उन्हें खाने को नहीं मिलता। मैं उन्हें खाना और दवा देना चाहता हूँ, उनका दोस्त बनना चाहता हूँ।"

"मालिक रहम करे!" पोपोल ने आह भरते हुए कहा। "पॉल-एमील के ख़याल हमें न जाने किस ठौर ले जाएंगे!"

दुकान के कोने में पॉल-एमील ने पोपोल को झिड़का। ''नाटक बन्द करो। आख़िर तुम्हीं ने पहले मुझे उन लाचार नन्हों के बारे में बताया था। तुमने कहा था कि वे शिशु यीशू तक के बारे में कुछ नहीं जानते। अब यह उम्मीद कैसे रख सकते हो कि मैं उनके हश्र की फ़िक्र तक न करूँ?''

"बेशक मैं चाहता हूँ कि तुम उनकी परवाह करो,'' पोपोल रोंदू आवाज़ में बोला। ''पर अपनी रहमत, अपनी उदारता को घर से इतनी दूर ले जाने की ज़रूरत क्या है?'' पॉल-एमील के चेहरे पर नाखुशी का भाव देख उसने जोड़ा, ''तुम्हें पता है ना मुझे अनजान चीज़ों से हमेशा डर लगता है।''

''तो तुम फ़ौरन अपनी हिम्मत बनाना शुरू कर दो,'' पॉल-एमील ने सख़्ती से सुझाया। ''मैंने तो मन बना लिया है। मैं मिशनरी ही बनूँगा।''

पोपोल ने उसाँस छोड़ी। ''खैर मुझे भी इस विचार की आदत पड़ जाएगी,'' वह बोला। ''तुम्हें बड़े होने में अभी समय लगेगा, तब ही तो घर छोड़ोगे।''

पॉल-एमील जानता था कि सपने को हक़ीकत में बदलना आसान न होगा। वह हर रोज़ यीशू से प्रार्थना करता कि वे उसे ताकत दें। वह हर सुबह अपनी नानी के साथ *मास* (कैथलिक पंथ की सामूहिक प्रार्थना) के लिए जाता। उसे अपनी नानी से बेहद प्यार था। कोई दूसरा प्रभु यीशू के बारे में उनसे बेहतर बता ही नहीं सकता था। *मास* के बाद पॉल-एमील नानी के पास बरामदे की सीढ़ियों पर बैठता। और नानी दोलन कुर्सी पर। वे सेंट फ्रांसुआ झील के झिलमिलाते पानी को निहारते। पॉल-एमील नानी के बोले हरेक लफ्ज़ को ध्यान से सुनता।

"एक दिन," नानी ने बात शुरू की, "ईश्वर ने अपने पुत्र यीशू को धरती पर भेजा, ताकि वह हम तक गॉस्पल पहुँचाए।"

"गॉस्पल भला क्या होता है नानी माँ?" पॉल-एमील ने जानना चाहा।

"इस लफ्ज़ का मतलब है 'शुभ संदेश', मेरे नन्हे।"

"शुभ संदेश?"

"मैं समझाती हूँ। 'शुभ संदेश' यीशू का जीवन है, वह एक खूबसूरत कहानी की तरह हमें समझाता है कि इस धरती के सभी इन्सान एक-दूसरे के भाई-बहन हैं। इसलिए हमें सबसे प्रेम करना चाहिए। ख़ास तौर से ग़रीब और दुखियारों और बीमारों से। उनके लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं, करना चाहिए। इसे ही रहमत या उदारता कहते हैं।"

मैं समझा," पॉल-एमील बोला। "एक दिन यह शुभ संदेसा मैं दुनिया भर के बच्चों तक पहुँचाऊँगा।"

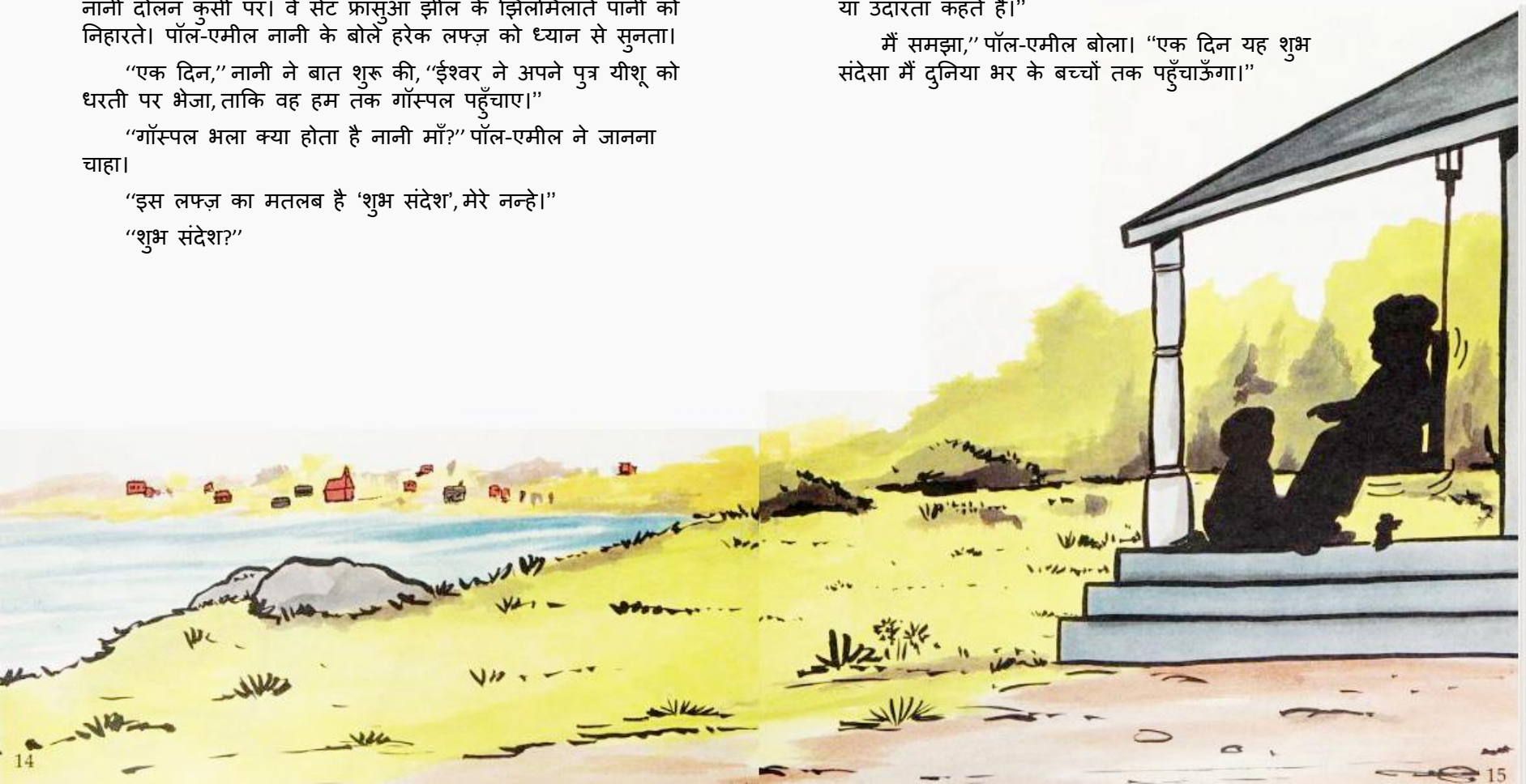

गाँव के स्कूल में पॉल-एमील ने खूब मेहनत से पढ़ाई की। "एक अच्छे मिशनरी को पूछे गए सवालों के जवाब आने चाहिए," वह खुद को याद दिलाता।

"सच है," पोपोल ने कहा। "पर इतना भर काफ़ी नहीं तुम्हें अच्छा वक्ता बनना भी सीखना होगा।"

"क्या मतलब?" पॉल-एमील ने जानना चाहा।

"तुम्हें दिलचस्प तरीके से कहानियाँ सुनाना भी सीखना होगा," पोपोल ने समझाया। "तुम रहमत और एक-दूसरे से प्यार करने की बात कहते थक सकते हो, पर अगर तुम्हारी बात लोगों को ऊब से उनींदा बना दे तो फ़ायदा नहीं होगा?"

पॉल-एमील ने इस पर सोचा। तब आख़िरकार बोला, "मैं जिस सबसे अच्छे क़िस्सागो को जानता हूँ वह टॉनटॉन मैसों है।"

सेंट एनिसेट में हरेक टॉनटॉन मैसों के क़िस्सों से वाकिफ़ था। वे पॉल-एमील के चचिया-दादा थे। सर्दियों की लम्बी शामों को रात के खाने के बाद टॉनटॉन मैसों और उनके दोस्त अलाव के गिर्द अपनी कुर्सियों पर हिचकोले खाते बैठते। लोगों ने उनका नाम 'रात के पहरेदार' रख डाला था।

''टॉनटॉन,'' पॉल-एमील ने गुज़ारिश की, ''अपने पुरखे ल्यूक यैसांत मैसों का क़िस्सा सुनाइए ना।''

''अरे फिर से?'' पोपोल ने ठण्डी आह भरी। उसे क़िस्सा मुँह-ज़बानी याद जो हो चुका था।

''बात बहुत समय पहले की है,'' टॉनटॉन मैसों ने बात शुरू की। ''उन दिनों फ्रैंच-कैनेडियन ब्रितानियों से लड़ रहे थे। वे खुद को 'पेट्रियोट' (देशभक्त) कहते थे। वे मुट्ठी भर थे, उनके पास बन्दूकें तक न थीं। पर बहादुर इतने कि दुश्मन तक उनकी बहादुरी से दंग रह गए। उन्होंने कई दिनों तक ब्रितानियों को रोके रखा। आख़िरकार वे हारे। तब ल्यूक यैसांत, यानी तुम्हारे परदादा, मेरे प्यारे पिता जंगलों में भाग गए। बाद में उन्हें धर-पकड़ कर बन्दी बना लिया गया और बर्मूडा भेज दिया गया।''

टॉनटॉन किस्से के इस मोड़ पर आ हमेशा कुछ पल रुकते। वे ख़ामोश बैठे, पाइप के कुछ कश खींचे, तब किस्सा जारी रखा। ''जंग के बाद मेरे पिता घर लौटे। देशवासियों ने उनका एक नायक-सा स्वागत किया। उन्हें संसद के लिए चुना।''

हालांकि पॉल-एमील यह किस्सा सैंकड़ों बार सुन चुका था, वह उसे मगन-मन आख़िर तक सुनता रहा।

''टॉनटॉन मैसों सचमें उम्दा वक्ता है,'' उसने सोते वक्त खुद से कहा। ''मैं तो बस उम्मीद ही कर सकता हूँ कि मैं भी किसी दिन अपने सुनने वालों को इसी तरह मोह कर यीशू की जीवन गाथा सुना सकूँगा।''

वह दिन भी आ ही गया जब पॉल-एमील को सेंट थेरीस सेमिनरी (धार्मिक शिक्षा संस्था) के लिए निकलना था। उसके माता-पिता उसे छोड़ने रेल स्टेशन आए। जब रेलगाड़ी ने निकलने की सीटी दी, पॉल-एमील का दिल बैठ गया। माँ ने अपने आँसू पोंछ उसे आखिरी सलाह दी।

"खूब मेहनत करना," वह बोली। "तुम्हें लैटिन, ग्रीक और गणित सीखनी होगी। नेक बने रहना और माँ को मत भूलना।"

रेलगाड़ी में सवार पॉल-एमील को उदासी ने घेर लिया। वह सचमें सेमिनरी जाना चाहता था, पर घर छोड़ना भी मुश्किल था। पोपोल दिमाग़ लगाने लगा कि वह अपने दोस्त को कैसे खुश करे। "उदास न हो पॉल-एमील," वह अपनी सुबकी दबाते बोला, "नहीं तो मैं भी रो पड़ूँगा। तुम उन बच्चों की बात सोचो जिनकी तुम किसी दिन मदद कर सकोगे। तुम्हें बेहतर लगने लगेगा।"

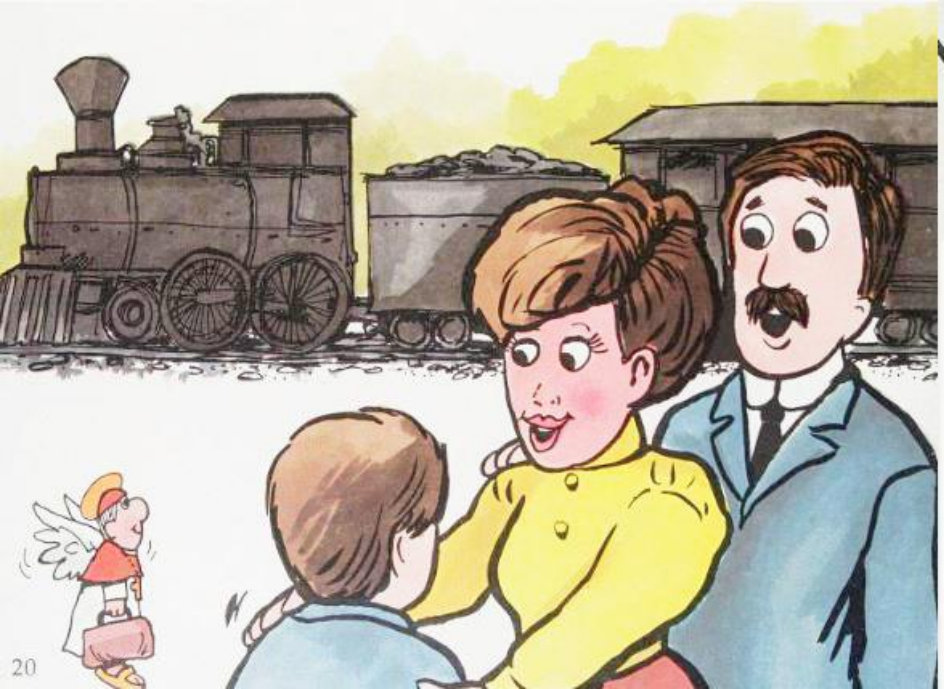

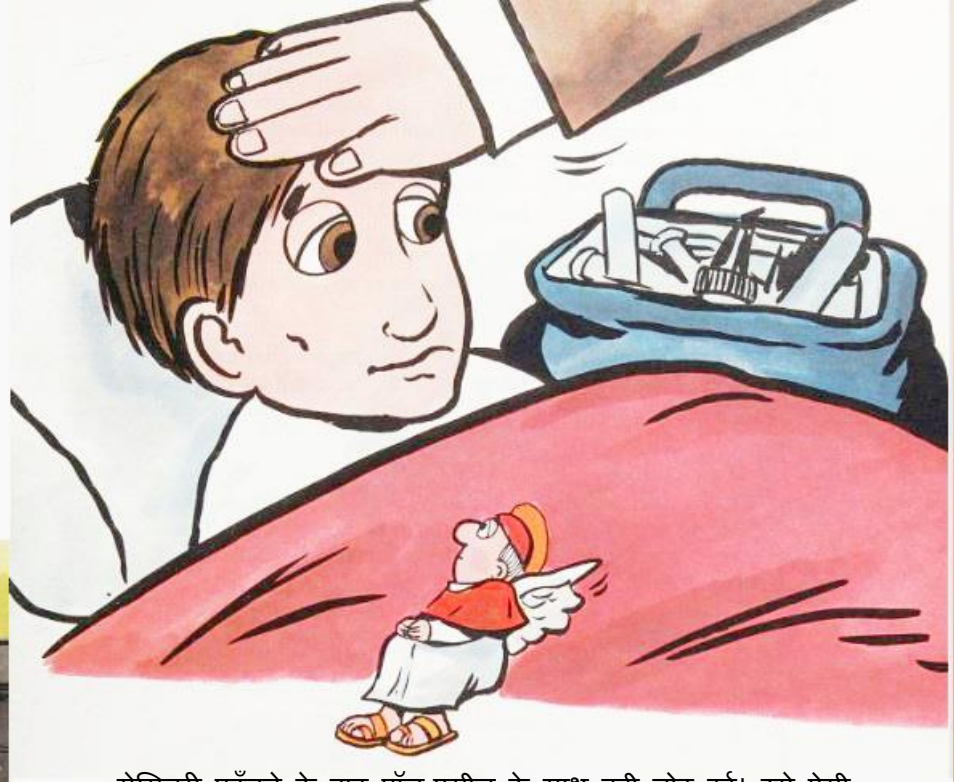

सेमिनरी पहुँचने के बाद पॉल-एमील के साथ बड़ी चोट हुई। उसे ऐसी खाँसी हो गई जो ठीक ही नहीं होती थी।

उसके शिक्षक चिन्ता में पड़ गए। "अरे, बेचारा छोटा-सा लड़का। इस तरह तो वह बेदम हो जाएगा। हमें डॉक्टर बुलाना चाहिए।"

डॉक्टर आया, उसने पॉल-एमील की जाँच की । तब संजीदगी से कहा "बच्चे की हालत ख़राब है। उसकी खाँसी टीबी का लक्षण है।"

टीबी या क्षय रोग गंभीर बीमारी है। उस समय यह रोग आम था। सेमिनरी के फादर सुपीरियर ने तय किया कि पॉल-एमील को घर लौट जाना चाहिए।

"अरे रे," फादर सुपीरियर ने पॉल-एमील को विदा करते कहा, "तुम्हें ठीक से आराम करने की ज़रूरत है। अपना पूरा ख़याल रखना और जल्द ही हमारे पास लौटना।"

पॉल-एमील उस पूरे सत्र घर में रहा। उसकी माँ घंटों उसके बिस्तर के पास गुज़ारती। धीरे-धीरे उसकी ताकत तो लौटने लगी पर वह बुरी तरह ऊब चुका था और बेहद उदास था। उसके माता-पिता उसका मन बहलाने की हर चन्द कोशिश करते। एक दिन तो पिता ने यह तक सुझाया कि वह परिवार की मोटर गाड़ी का इन्जन खोल दे, ताकि कुछ समय तो गुज़रे। पॉल-एमील ने उनकी बात मान तो ली पर उसका दिल इसमें भी न लगा।

"पोपोल," वह बार-बार पूछता, "क्या मैं कभी पादरी बन भी सकूँगा? मुझे भरोसा ही नहीं होता कि ख़ुदा को मुझ जैसे कमज़ोर बन्दे की ज़रूरत होगी। सब सत्यानाश हो गया है!"

"ख़ुदा किसीको खाली हाथ नहीं लौटाता," पोपोल उसका हौसला बढ़ाते कहता। "पर हमेशा शिकायत करने के बदले तुम कुछ रचनात्मक क्यों नहीं करते?" फ़रिश्ता चाहता था कि उसका दोस्त उदासी से उबरे।

"सेमिनरी से इतनी दूर मैं भला क्या कर सकता हूँ?"

"भई, तुम श्रोताओं के सामने बोलने का अभ्यास कर सकते हो। मुझे किया अपना वादा क्या तुम भूल गए? तुमने कहा था कि किसी दिन मुझे यीशू की ज़िन्दगी की कहानी सुनाओगे। तुमने वादा यह किया था कि वह इतनी सुन्दर कहानी होगी जैसी किसी ने पहले सुनी ही न हो।"

सो पॉल-एमील इस काम में जुट गया। वह हर दिन आईने के सामने अपने छोटे-से भाषण का अभ्यास करता। जब उसे अपनी तैयारी पर भरोसा हो गया उसने अपनी नानी और छोटे भाई जूल्स (जो बाद में कनाडा का गवर्नर जनरल बना) को बुलाया और उन्हें अपना तैयार किया प्रवचन सुनाया।

"मेरे प्यारे भाइयों," उसने अपने गाँव के पादरी की नकल करते कहा। "आज मैं आपको ईसाई रहमत यानी उदारता के बारे में बताने वाला हूँ। क्या आपने उन नन्हे बच्चों के बारे में कभी सोचा है जो दूर-दराज के मुल्कों में भूख से मर रहे हैं। यीशू ने उन सबको रोटी दी थी जिनके पास खाने को नहीं था। जब वे दुखी थे यीशू ने उन्हें दिलासा दी। यीशू ने बीमारों की सेवा की।"

जब पॉल-एमील ने अपनी बात ख़त्म की नानी की आँखें डबडबा आई थीं। उन्होंने सोचा ही नहीं था कि उनका अपना पॉल-एमील इस कदर दिल को छूने वाली बात कह सकता है।

उस क्रिसमस के मध्य रात्रि के *मास* के दौरान पॉल-एमील के साथ कुछ अद्भुत हुआ। छोटा-सा गिरजा ऑर्गन संगीत से गूंज रहा था। गायक दल 'होली नाईट" (पवित्र रात्रि) गा रहा था। पॉल-एमील प्रार्थना में डूबा था। अचानक उसने साफ़-साफ़ सुना, "तुम पादरी बनोगे!"

"तुमने सुना पोपोल," गिरजे से निकलते समय उसने अपने रखवाले फ़रिश्ते से पूछा।

"बेशक सुना। तुम्हें मेरा शुक्रगुज़ार होना चाहिए," पोपोल ने फक्र से फूलते कहा, "मैंने तुम्हारी सिफ़ारिश अपने ऊपर वाले दोस्तों से की थी।" उसने छाती ठोकते आगे जोड़ा, "मेरी पहुँच ऊँची जगहों पर जो है।"

अब जब पॉल-एमील को विश्वास हो गया कि उसका सपना सच होगा उसकी तबियत में जादूई सुधार होने लगा। जल्द ही वह स्कूल लौटा।

हालांकि वह साल भर स्कूल से गायब रहा था वह अच्छे अंक ला सका। एक शिक्षक ने तो उसे दस में से साढ़े दस अंक दिए!

"तुम्हें वे शामें याद हैं जो तुमने अपने सहपाठियों की मदद करते बिताई थीं?" पोपोल ने पूछा। "तुम दूसरे लड़कों के साथ खेल सकते थे। पर तुमने उनकी मदद की जिन्हें ज़रूरत थी। यह कामयाबी उसी का इनाम है।"

उस गर्मियों में पॉल-एमील ने आराम किया। तब पतझड़ में मोंट्रियाल की सेमिनरी में और भी कठिन पढ़ाई शुरू की। अगले चार सालों तक वह बिना छुट्टी लगातार अध्ययन में जुटा रहा।

आख़िरकार पॉल-एमील की दीक्षा का दिन आया जब उसे पादरी बनाया जाना था। उसका परिवार और दोस्त मोंट्रियाल के कैथिड्रल में इस समारोह के लिए इकट्ठा हुए। रस्म के अनुसार पॉल-एमील आर्चबिशप के कदमों में लेटा ताकि विधि पूरी की जा सके। उसे लगा कि यह उसकी ज़िन्दगी का सबसे खूबसूरत दिन है।

"अब मैं *मास* पढ़ सकता हूँ," उसने बाद में पोपोल को फुसफुसा कर कहा।

"और प्रवचन भी दे सकते हो...ऊपर वाले को पता है कि तुमने कितना अभ्यास किया है," पोपोल ने जवाब में कहा।

समारोह के बाद शानदार भोज था। पोपोल शान्त न बैठ सका। वह एक से दूसरे मेहमान तक उड़ता रहा। बड़े पादरियों को उसने झुक कर सलाम किया। वह पॉल-एमील को अपनी टिप्पणियाँ सुनाने लौटता रहा।

"तुमने बिशप का टोप देखा? कितना ऊँचा है!"

"उसे टोप नहीं *मायटर* कहते हैं," पॉल-एमील ने बताया।

"पता है बिशप टोप क्यों पहनते हैं?" पोपोल ने पॉल-एमील की भूल सुधार को अनसुना करते कहा।

"अब तुम क्या कहोगे?" पॉल-एमील ने आह भरी। उसे पता था कि पोपोल अपना मज़ाक सुनाने को बेताब है।

"इसलिए क्योंकि जिस दिन उन्हें बिशप बनाया जाता है पवित्र आत्मा उनके सिर पर उतरती है। वह फटाक से टोप चढ़ा लेता है ताकि वह वापस न जा सके।"

चन्द सालों बाद पॉल-एमील के वरिष्ठ पादरियों को लगा कि वह मिशनरी बनने को तैयार है। "हम एक सेमिनरी बनाने उसे जापान भेज देते हैं," उन्होंने तय किया।

सो पॉल-एमील, जिन्हें अब फादर लेजे कहा जाता था, कुछ दूसरे मिशनरियों के साथ एक बड़े से जहाज़ में निकले। जापान तक के सफ़र में दस दिन लगे। समुद्र हिलोरें ले रहा था, कई सवारियों को इससे चक्कर आए, उल्टियाँ हुईं। पर पॉल-एमील ने इसके बावजूद हर दिन *मास* पढ़ा। हालांकि उन्हें भी अपना संतुलन बनाना पड़ता था, मानो वे तनी हुई रस्सियों पर चल रहे हों।

ग्यारहवें दिन अल्ल सुबह टोक्यो खाड़ी में योकोहोमा घाट नज़र आया।

"चलो पैर खोलने के लिए ज़रा टहल लें," जहाज़ थमने पर एक मिशनरी साथी ने सुझाया। उनके पास काफ़ी वक़्त था, क्योंकि फुकुओका तक ले जाने वाली रेलगाड़ी शाम को निकलने वाली थी। सो वे टोक्यो की सड़कों पर टहलने लगे। रिक्शों से बचते-बचाते, दोपहियों की इस सवारी-गाड़ी को दौड़ते पुरुष खींच रहे थे। उन्होंने मकानों के सामने लटके लालटेनों को तारीफ़ की नज़र से निहारा।

"सब कुछ कितना भीड़-भड़ाके से भरा और व्यस्त है?" पॉल-एमील ने अचरज से सोचा। वे यह देख दंग थे कि साइकिल सवार रिक्शों के बीच तेज़ी से लहराते निकले जा रहे थे।

टोक्यो से निकलने के पहले मिशनरियों ने एक रेस्त्रां में ठेठ जापानी खाना खाने का फ़ैसला किया।

क्या आपने कभी चॉपस्टिक से चावल खाने की कोशिश की है? आपको उन्हें अपने अंगूठे और उंगलियों के बीच फंसाना होता है और तब उनसे खाना उठाना होता है। फादर लेजे को खाने में दिक्कत हुई। पोपोल का चेहरा उन्हें देख हंस-हंस कर लाल हो गया।

"अरे भई," उसने बीच में साँस खींचते कहा। "तुम वाकई फूहड़ों के सरताज हो!"

"देखूँ तुम कितनी सिफ़त बरत सकते हो?" पॉल-एमील ने जवाब दिया।

"शुक्र है फ़रिश्तों को खाना ही नहीं पड़ता!" पोपोल ठिठियाते हुए बोला।

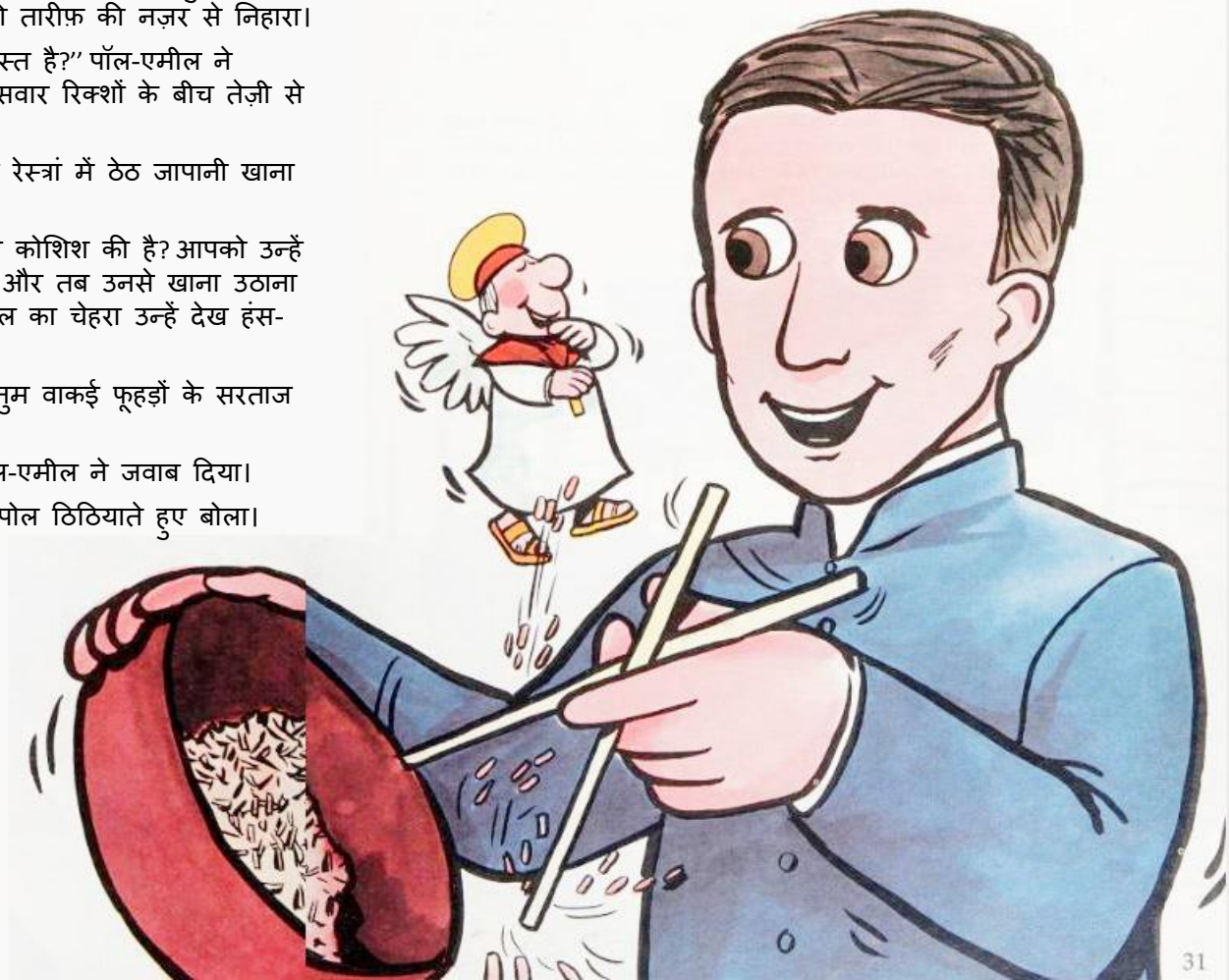

रेलगाड़ी का सफ़र मानो खत्म ही नहीं हो रहा था। इसके बावजूद जब तक पोपोल ठीक से स्थिर हुआ ही था कि कन्डक्टर ने ऐलान किया, "फुकुओका।" यह एक बड़ा शहर था जो एक पहाड़ी की ढ़लान पर समुद्र को देखता बसा था।

सबसे पहली ज़रूरत थी देश की भाषा सीखना। अगले छह माह तक पॉल-एमील ने जापानी भाषा का अध्ययन किया। शाम को थक कर लाल हुई आँखों के साथ वह अपनी *तातामी,* पर लुढ़क जाता, जो धान के पुआल से बुनी चटाई होती है।

"*ओयासुमी नासाई,*" पोपोल ने शेखी बघारते कहा।

"सही है, शुभ रात्रि पोपोल!"

आखिर वह दिन भी आ गया जब फादर लेजे ढंग से इतनी जापानी बोलने लगे कि बच्चों को यीशू के बारे में सिखा सकें। वे बाँस के जंगल को पार कर एक टूटी-फूटी इमारत के पास पहुँचे, जो ढ़हने को तैयार लगती थी।

"क्या यही तुम्हारा स्कूल है?" पोपोल ने चौंक कर पूछा

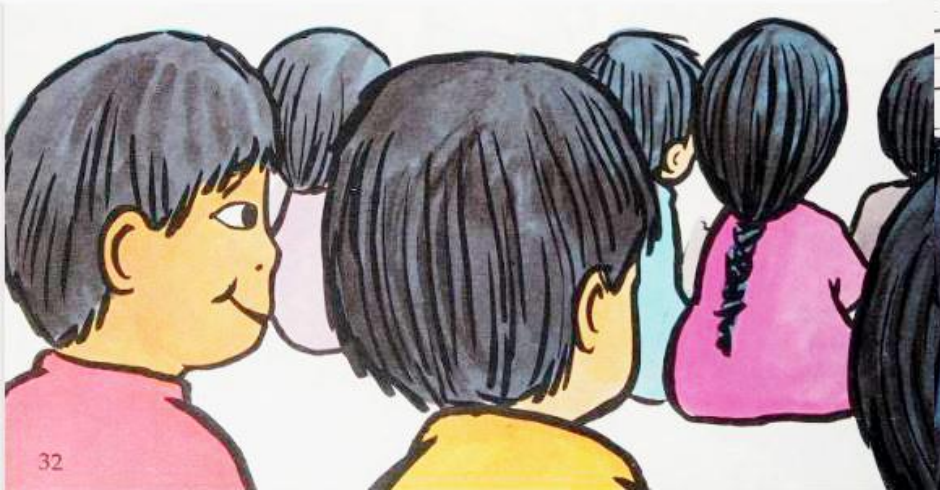

ख़ुद पर तरस खाने का वक्त न था। बच्चे आ चुके थे। उन्होंने जापानी विधि से झुक कर अपने नए शिक्षक का स्वागत किया।

"*शिंपू सामा!*" वे एक साथ बोले। इसका मतलब है 'माननीय पिता'।

फादर लेजे को उनकी कक्षा दिखाई गई जो परछत्ती में थी। उन्होंने अपना पाठ शुरू किया।

"आखिरकार अब मैं जापानी बच्चों के लिए शुभ संदेश ला पाया हूँ।"

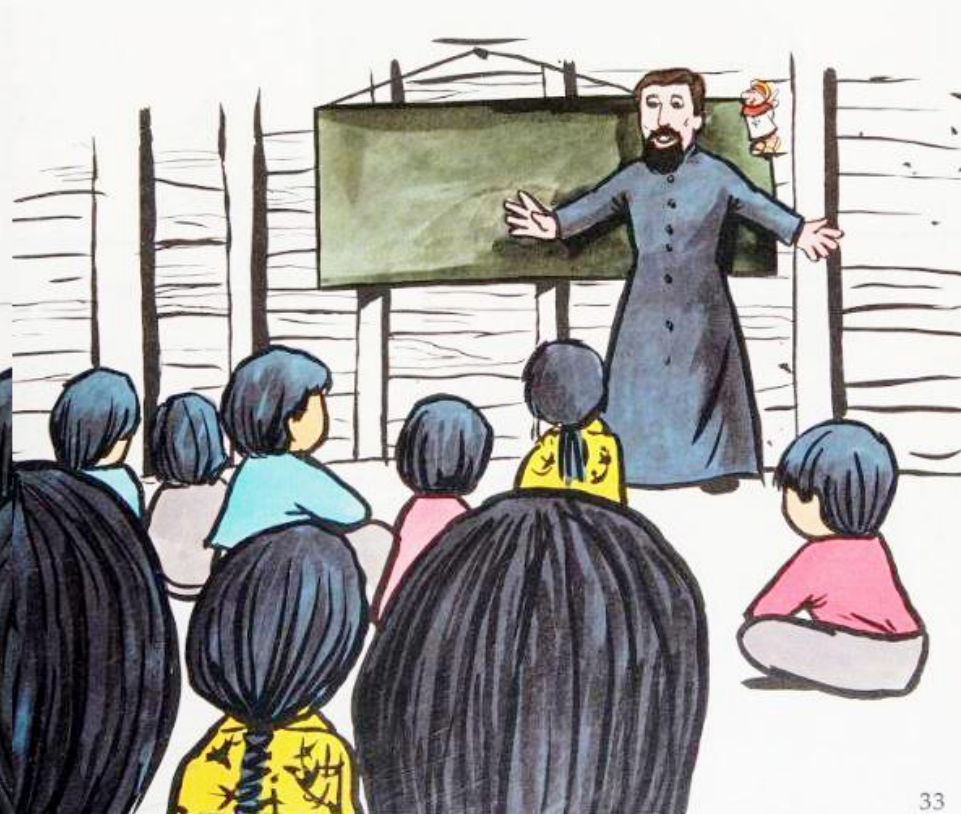

एक सुबह पॉल-एमील ने पाया कि स्कूल का दरवाज़ा बन्द है। दरवाज़े पर सूचना चस्पाँ थी, 'हैजे की महामारी के कारण स्कूल बन्द है।''

पूरे शहर में उथल-पुथल मची थी। डॉक्टर दिन-रात काम कर रहे थे। महामारी फैलती गई और धीरे-धीरे स्कूल और दुकानें एक के बाद एक बन्द होने लगीं। आपात्कालीन दल की तमाम कोशिशों के बावजूद छह साल से कम उम्र के पाँच सौ से अधिक बच्चों की मौत हो गई। ''हाय बेचारे!'' पोपोल ने दुख से कहा।

इस महामारी के दौरान फादर लेजे भला कहाँ थे? रोग से बचने अपने कमरे में बन्द? बिलकुल नहीं। वे दिन-रात मरीज़ों की तीमारदारी में लगे रहे। ''रहमत के बारे में दूसरों को सिखाना भी ज़रूरी है,'' एक बीमार नन्हे का कपाल धोते उन्होंने सोचा। ''पर एक अच्छे मिशनरी को जो कुछ भी उस वक्त की ज़रूरत हो उसे करने को हमेशा तैयार रहना चाहिए।''

जिस किसीने उन्हें बीमार बच्चों की तीमारदारी करते देखा उसीने सोचा कि वे सबसे परोपकारी इन्सान हैं।

महामारी खत्म हुई, सब अपने-अपने काम पर लौटे पॉल-एमील भी अपने नन्हें छात्रों को पढ़ाने लगे। इधर बढइयों ने एक नई सेमिनरी की इमारत भी तैयार कर दी।

पर बदकिस्मती से फादर लेजे को अपना काम पूरा करने के पहले ही लौटना पड़ा। दूसरे विश्व युद्ध का ऐलान हो चुका था और दुनिया के सभी देश उसमें उलझ गए थे। जापान और कनाडा अब विरोधी खेमों में थे। कनाडा से आए मिशनरी अब जापान के दुश्मन थे। पर जापानी बच्चों के लिए वे दोस्त ही थे। जब उन्होंने विदा ली बच्चे रो रहे थे।

''मेरे दिल का एक टुकड़ा हमेशा यहाँ जापान में रहेगा,'' पॉल-एमील ने दुखी हो पोपोल से कहा।

कनाडा लौट पॉल-एमील निठल्ले नहीं बैठे। लोग उनसे जापान के अनुभव सुनना चाहते थे। सो पॉल-एमील एक से दूसरे कस्बे में जा अपने अनुभव सुनाने लगे। वे अपना जापानी किमोनो पहनते, उनकी दाढ़ी लम्बी थी। वे इस शिद्दत से किस्से सुनाते कि सुनने वाले मिशनरी बनने का सपना देखने लगते।

बड़े पादरी उनके काम से इतना खुश थे कि उन्होंने पॉल-एमील को वैलीफील्ड पैरिश का पादरी बना दिया। वहीं तो वे पैदा हुए थे। उनके माता-पिता भी बिना समय ज़ाया किए वैलीफील्ड लौट आए। उन्होंने पास ही एक घर ले लिया। इतने साल अपने बड़े बेटे से दूर रहने के बाद उसके करीब रहना उनके लिए खुशी की बात थी।

युद्ध खत्म होते ही हमारा मुसाफ़िर फ़िर से निकला। इस बार उसे कनाडा के युवा पादरियों के कॉलेज का प्रभारी बनाकर रोम भेजा गया था।

"कैसी वीरानी पसरी है," इटली से गुज़रते उनकी आह निकली। युद्ध ने पूरे मुल्क को खण्डहरों में तब्दील कर दिया था। घर-बार ज़मींदोज़ हो चुके थे, नावें डुबा दी गई थीं, घाट तहस-नहस थे। सड़क के किनारे चीथड़ों में लिपटे बच्चे राहगीरों से भीख माँग रहे थे, "खाना! मेहरबानी से कुछ खाने को दे दीजिए।"

"तैयार हो जाओ पोपोल," पॉल-एमील ने चेताया। "हम इन जंग पीड़ितों की मदद करेंगे।"

"पर कैसे?" पोपोल ने ऐतराज़ किया। "ये इतने सारे हैं और फिर हमारे पास पैसे भी तो नहीं हैं।"

पर जिसका दिल रहमत से लबरेज़ हो उसे अड़चनें कब रोक पाती हैं।

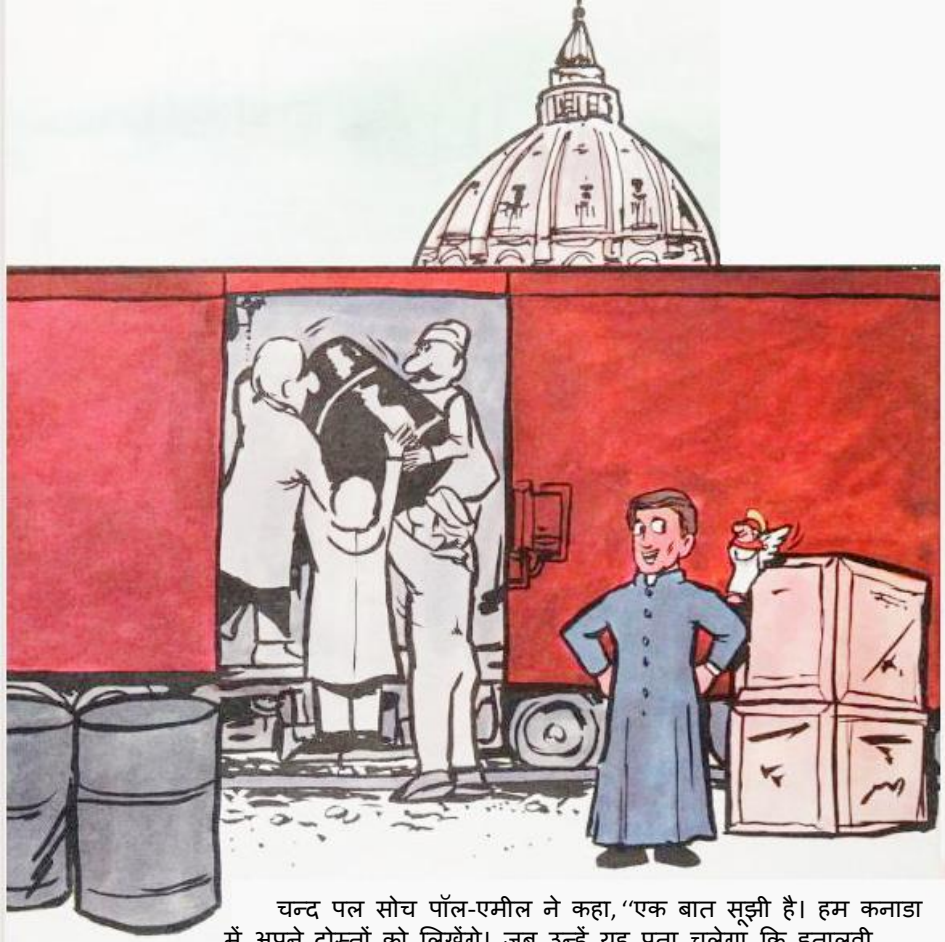

चन्द पल सोच पॉल-एमील ने कहा, ''एक बात सूझी है। हम कनाडा में अपने दोस्तों को लिखेंगे। जब उन्हें यह पता चलेगा कि इतालवी लोग किन भयंकर हालातों में जी रहे हैं, वे ज़रूर मदद करना चाहेंगे।''

''तुम जिस सिफ़त से प्रवचन देते हो, अगर उसी तरह लिखोगे,'' पोपोल ने रज़ामन्दी जताते कहा, ''तो फिक्र की बात ही नहीं है। हमें इतना मिलेगा कि हम दुनिया भर को खिला सकेंगे।''

पेपोल ने सच कहा था। ख़त भेजने के कुछ ही सप्ताह बाद पॉल-एमील रेल स्टेशन गए, पाँच रेल डब्बों में लदे सामान को लाने। जैम, कॉर्न सिरप, कॉड मछली का तेल, दवाएँ...सब कुछ था।

''इन पेटियों को पोप के भण्डार में पहुँचा दें,'' उन्होंने कहा।

सब जानते थे कि पोप पायस बारहवें, दुनिया भर से राहत सामग्री इकट्ठा करवा रहे थे ताकि ज़रूरतमंदों को खाना और कपड़ा मुहैय्या करवा सकें। जब उन्होंने एक साथ इतनी पेटियाँ देखीं तो वे भौंचक रह गए।

''यह सब कहाँ से आया है?'' पोप ने पूछा।

''कनाडा से,'' पॉल-एमील ने बताया। ''मैंने आपकी ओर से एक अपील लिखी थी और मेरे दोस्तों ने रहमत दिखाई।''

''यहाँ आओ, मेरे बेटे,'' पोप पायस बारहवें बोले। ''आओ ताकि मैं तुम्हें आशीष दे सकूँ।''

यह पोप और कनाडा के इस पादरी के बीच एक करीबी दोस्ती की शुरुआत थी। पॉल-एमील अब मॉनसिनियर लेजे बन गए। हर महीने कनाडा से खाने के सामान की पेटियाँ पहुँचती रहीं। पोप अपने नए मित्र की तारीफ़ करते न थकते। अख़बार पॉल-एमील के कारनामों की और उनके प्रति पोप के स्नेह की कहानियाँ छापने लगे।

हरेक कनाडावासी जो रोम से गुज़रता मॉनसिनियर लेजे से एक ही अहसान चाहता। "आप पोप के इतने करीबी मित्र हैं, क्या आप हमें उनके दर्शन करवा सकते हैं।"

पॉल-एमील उनकी इच्छा पूरी करते। पोप के व्यक्तिगत कक्षों में उनका हमेशा स्वागत होता - यह सम्मान बिरले को ही मिलता है।

पोप पायस बारहवें को पॉल-एमील का साथ अच्छा लगता था (और वह *फज* भी जो श्रीमति लेजे अपने बेटे के हाथों पोप के लिए भिजवाती थीं)। बहरहाल वह दिन भी आया जब पोप को अपने युवा मित्र को विदा करना था। वे पॉल-एमील को एक अधिक ज़रूरी मिशन पर भेजना चाहते थे।

पता है उन्होंने पॉल-एमील को कहाँ भेजा?

उन्होंने पॉल-एमील को आर्चबिशप बना मोंट्रियाल भेजा। पोपोल ने जब यह ख़बर सुनी वह तो बेहोश ही हो गया।

"अरे बाप रे! मिशनरी, तब पैरिश का पादरी और अब आर्चबिशप? आगे न जाने क्या होगा? पर खबरदार, इस तरक्की को अपने सिर पर हावी न होने देना!"

पोपोल को फिक्र नहीं करनी चाहिए थी। बेशक पॉल-एमील इस सम्मान से खुश थे। पर उन्हें इस बात की खुशी कहीं अधिक थी कि यह नया पद उन्हें और लोगों की मदद करने का मौका देगा।

पोपोल को अपने अचरज से जूझता छोड़ पॉल-एमील ने अपना सामान समेटा। तब वे वैटिकन में पोप से विदा लेने गए। पोप ने उन्हें गले लगाया और कहा, "मुझे तुम्हें जाते देख दुख है मॉनसिनियर लेजे।"

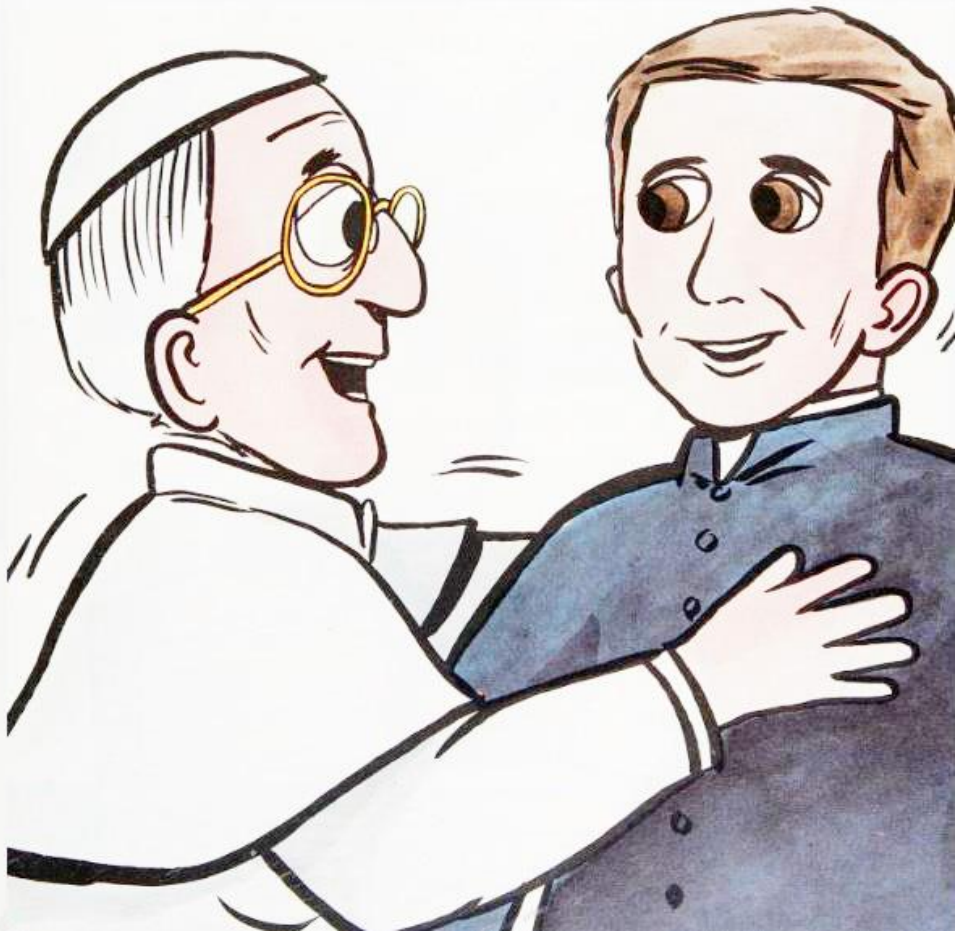

पॉल-एमील के लौटने पर मोंट्रियाल के गिरजों के घंटे उनके स्वागत में बज उठे। पोपोल बेहद खुश था।

"जब मैं सोचता हूँ कि अब तुम्हारे पास एक सिंहासन है, सोने के तारों से बुनी पोशाक है, और राजसी गहने हैं..." वह इस शान-शौकत से भावुक हो बोला।

पॉल-एमील ने उसे बख़ान करने दिया। पर वे जानते थे कि पोप ने उन्हें कठिन ज़िम्मेदारी सौंपी है। मोंट्रियाल में कई ग़रीब परिवार थे, जो ठण्ड और भूख की मार झेल रहे थे। उनकी मेज़ पर सैकड़ों ख़तों के ढ़ेर लगे थे। उन्होंने उसमें से सबसे बड़े लिफ़ाफ़े को खोला। एक सफ़ेद कागज़ पर किसीने एक पैर की आकृति खींची थी। उसके नीचे लिखा था। "मैं आठ साल की हूँ, मेरे पास जूते नहीं हैं। मैंने अपने पैर की रेखा खींची है ताकि आप मुझे जूते का एक जोड़ा दिलवा सकें। शुक्रिया। मारी जोसे।"

अगले ही दिन मारी जोसे को जूतों का एक बढ़िया जोड़ा मिल गया।

पॉल-एमील ने मोंट्रियाल के बाशिन्दों से वादा किया, "जब तक मोंट्रियाल में गरीब हैं, मैं एक भी दिन आराम नहीं करूँगा।"

और उन्होंने यह वादा निभाया भी। उस दिन के बाद से मोंट्रियाल के कोने-कोने से ज़रूरतमन्द ग़रीब उनका दरवाज़ा खटखटाते रहे।

"मेरी मदद करें," एक ने चिरौरी की, "मेरे परिवार में पाँच लोग हैं, और मुझे काम मिल ही नहीं रहा है।"

"कमर से नीचे के मेरे अंग लकवाग्रस्त है," दूसरे ने बिसुरते हुए कहा, "मेरा परिवार ही नहीं है जो मेरी देखभाल करे।"

तब एक सुबह कोई कैथिड्रल की सीढ़ियों पर एक चार माह के शिशु को टोकरी में छोड़ गया। शिशु गूंगा, बहरा और अंधा था। उसकी कलाई पर बंधी पट्टी पर सिर्फ़ उसका नाम लिखा हुआ था - वॉल्टर।

"बेचारा वॉल्टर," पॉल-एमील ने टोकरी उठाते हुए उसांस छोड़ी। "कितना नन्हा, कितना लाचार! एक और जिसे परिवार की ज़रूरत है।"

पोपोल बेचैन हो आगे-पीछे सिर हिलाता घूम रहा था।

"मेरी बात सुनो, पॉल-एमील," वह आख़िर फट ही पड़ा। "यहाँ इतने लोग बेघर हैं। क्या हम इन सबका एक बड़ा-सा परिवार नहीं बना सकते? परिवार जो इन सबको शामिल कर सके?"

"ख़याल तो बहुत ही अच्छा है!" पॉल-एमील ने कहा। "हम एक इमारत बनाने से शुरू करते हैं। वह काफ़ी बड़ी, रौशन और गर्म होगी।"

उन्होंने एक परिचित बढ़ई को फोन खटकाया। वह बढ़ई एक नल वाले को जानता था, जो एक बिजली वाले को जानता था, जो एक पलस्तर करने वाले को जानता था।

"अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को भी साथ लेते आना," पॉल-एमील ने सबसे गुज़ारिश की।

सबने मिलजुल कर लाल ईंटों की एक लम्बी-सी इॅमारत बनाई। "इसे हम "चैरिटी हाउस" (रहमत भवन) कहेंगे," आर्चबिशप लेजे ने फ़क्र से ऐलान किया।

इमारत का काम खत्म हुआ ही था कि चैरिटी हाउस भर गया। जो भी वहाँ रहने आया वह एक बड़े और सुखी परिवार का हिस्सा बना। जो रहवासी चल सकते थे, वे लकवाग्रस्त लोगों के काम कर देते। जो देख सकते थे वे अंधों को पढ़ कर सुनाते। यों सब खुश रहते। पर एक सुबह पोपोल ने पॉल-एमील के फिक्रमंद चेहरे पर ग़ौर किया। "ओह! यह संकेत तो बुरा है," उसने खुद से कहा। "अब भला क्या परेशानी है?"

"पोपोल," पॉल-एमील ने साफ़ किया, "क्रिसमस आने वाली है। पर बैंक में हमारे पास एक पाई तक नहीं है। शहर के लोगों ने पहले ही इतनी उदारता दिखाई है कि उनसे और दान मांगा नहीं जा सकता।"

वे थक कर अपनी कुर्सी पर बैठे। "काश मैं अपने रहवासियों को क्रिसमस पर एक बढ़िया तोहफ़ा दे सकता।"

"यह मुझ पर छोड़ो," पोपोल ने सलाह दी। "व्यवस्था मैं करूंगा, कसम से!"

क्या आप अंदाज़ लगा सकते हैं कि क्या हुआ होगा?

क्रिसमस की पूर्व संध्या को आधी रात के पहले, रसोई घर के दरवाज़े पर एक ट्रक आ कर रुका।

"मुझे कहा गया है कि मैं ये सारे खोखे यहाँ पहुँचा दूँ," ट्रक चालक ने कहा।

"तुम्हें भेजा किसने है?" आर्चबिशप ने जानना चाहा।

"मुझे कोई नाम नहीं बताया गया," चालक ने जवाब दिया, और चलता बना।

चैरिटी हाउस के बाशिन्दों के लिए कैसे लज़ीज़ पकवान आए थे! भरवां टर्की, क्रैनबरी के शोरबे के साथ। गरमा-गरम रोल, केक, पाई, आइसक्रीम। साथ थे क्रिसमस के मोज़े जिनमें संतरे और मीठी गोलियाँ भरी थीं। मध्यरात्रि के *मास* के बाद सब दावत खाने बैठे। वॉल्टर, जो सबका दिल जीत चुका था, मेज़ पर आर्चबिशप के पास बैठा था।

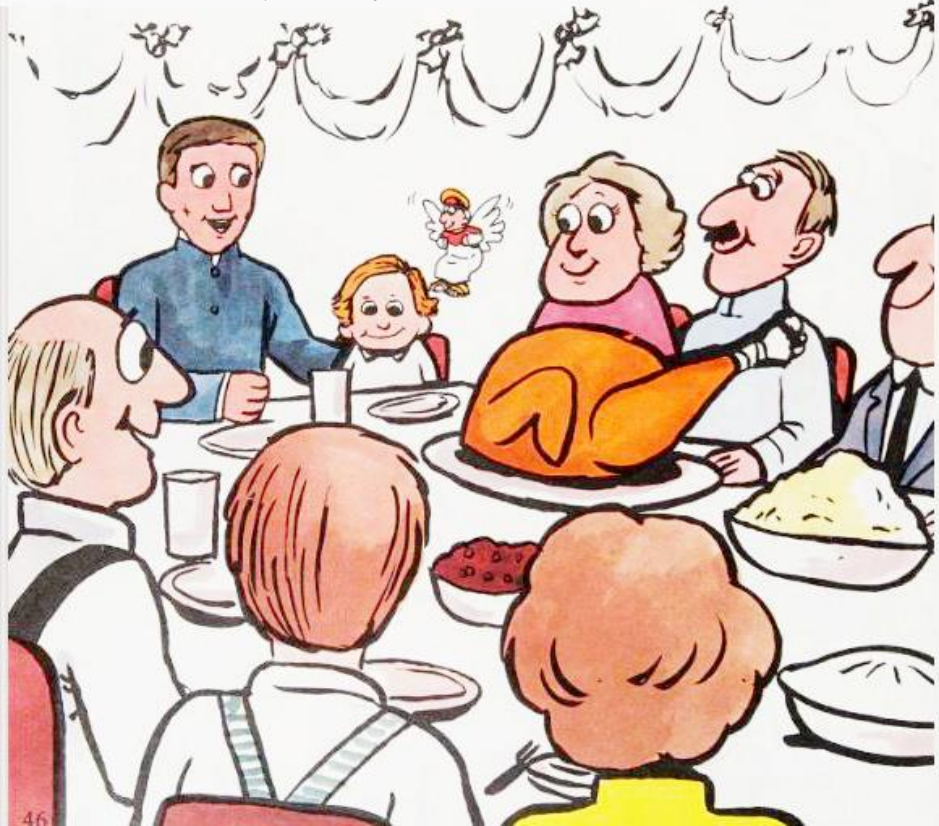

रोम में पोप पायस बारहवें ने आर्चबिशप के कामों के बारे में सुना।

"मैं उन्हें कार्डिनल का पद दूँगा," पोप ने ऐलान किया।

कार्डिनल चर्च के राजकुमार होते हैं। कार्डिनल बनाया जाना बड़े सम्मान की बात है। दुनिया के सभी मुल्कों में कार्डिनल होते हैं। वे पोप के मुख्य सलाहकार होते हैं। जब पोप की मृत्यु होती है कार्डिनल अपने बीच से किसी एक को अगला पोप चुनते हैं। यह सबसे बड़ा सम्मान होता है।

आर्चबिशप लेजे रोम गए, जहाँ पोप ने उनके सिर पर *बरैटा* रखा - यह वह लाल टोप है जिसे कार्डिनल पहनते हैं। जब वे मॉंट्रियाल लौटे वहाँ के निवासियों ने सड़कों को सजाया। शहर में ऐसी सजावट पहले कभी नहीं हुई थी। झण्डे हवा में फहरा रहे थे, बर्फ़ से ढ़के पेड़ों से लटके बैनर फड़फड़ा रहे थे। कलाकारों ने बर्फ़ पर आकृतियाँ उकेरी थीं।

''हमारा कार्डिनल जुग-जुग जिए!'' सड़कों पर खड़े लोगों ने नारा लगाया। ''हमारा राजकुमार जुग-जुग जिए!''

घुड़सवार पुलिस नए कार्डिनल की गाड़ी के लिए रास्ता बना रही थी। पॉल-एमील लाल परिधान में थे। जैसे-जैसे जुलूस आगे बढ़ा सड़क के दोनों ओर खड़ी भीड़ घुटनों पर झुकी, ताकि उन्हें कार्डिनल के आशीष मिल सकें।

पूरे शहर में दिनों-दिन तक धार्मिक अनुष्ठान और दावतें हुईं। और जब सारे जलसे अंत-तंत खत्म हुए, तब पॉल-एमील ने क्या किया होगा? क्या उन्हें लगा होगा कि अब मैं मशहूर हो चुका हूँ, सो अच्छे से आराम कर सकता हूँ?

कतई नहीं! पॉल-एमील ने पहले से भी अधिक मेहनत की। उन्होंने एक अनाथालय खोला, असाध्य बीमारियों से जूझ रहे मरीज़ों के लिए अस्पताल बनाया और बड़े-बूढ़ों के लिए वृद्धाश्रम। ''हम इस आश्रम को 'स्वर्ग का द्वार' कहेंगे,'' उन्होंने फ़ैसला किया।

कुछ सालों बाद पॉल-एमील को गहरा शोक हुआ। बयासी वर्ष की आयु में पोप पायस बारहवें की मृत्यु हो गई।

"मैंने एक अज़ीज़ दोस्त को खो दिया है," उन्होंने पोपोल से कहा। "बल्की मित्र ही नहीं, एक पिता को खो दिया है।"

ख़बर पाने के अगले ही दिन पॉल-एमील रोम गए। वहाँ दुनिया भर से आए कार्डिनलों से मिले। वे सब सिस्टीन चैपल में इकट्ठा हुए। हरेक ने एक पर्ची पर उस कार्डिनल का नाम लिखा जिसे वह पोप के पद पर देखना चाहता था।

बाहर कार्डिनलों का फ़ैसला सुनने विशाल जन-समूह जमा था। अचानक चैपल के ऊपर आकाश में सफ़ेद धुँआ नज़र आया। इसी संकेत का लोग इन्तज़ार कर रहे थे। इसका मतलब था नया पोप चुना जा चुका है। लोग चीख पड़े, "*वीवा ल पापा!*" "पोप जुग-जुग जिए!"

जब पॉल-एमील चैपल से निकले वे भावुक हो गए। "मैं जानता हूँ कि जॉन तेइसवें असाधारण पोप सिद्ध होंगे।"

अगले दस वर्षों तक कार्डिनल लेजे ने मोंट्रियाल के ग़रीब और बीमार लोगों के बीच अपना काम जारी रखा। तब एक दिन ऐसा ऐलान किया जिससे पूरा मुल्क सकते में आ गया।

केवल पोपोल को कोई अचरज नहीं हुआ। पॉल-एमील ने अपने भरोसेमन्द दोस्त को अपनी योजना पहले ही बता दी थी।

"पोपोल अपना बोरिया-बिस्तर समेट लो, हम जाने वाले हैं।"

पेपोल को अपने कानों पर भरोसा ही नहीं हुआ। "जाने वाले हैं? पर कहाँ?"

"मैं फिर से मिशनरी बनना चाहता हूँ," पॉल-एमील ने जवाब दिया।

"तुम मज़ाक कर रहे हो!" पोपोल बोला। "यहाँ कितना कुछ करना बाकी है। तुम अपने ही शहर के लाचार अभागों को छोड़ कर नहीं जा सकते।"

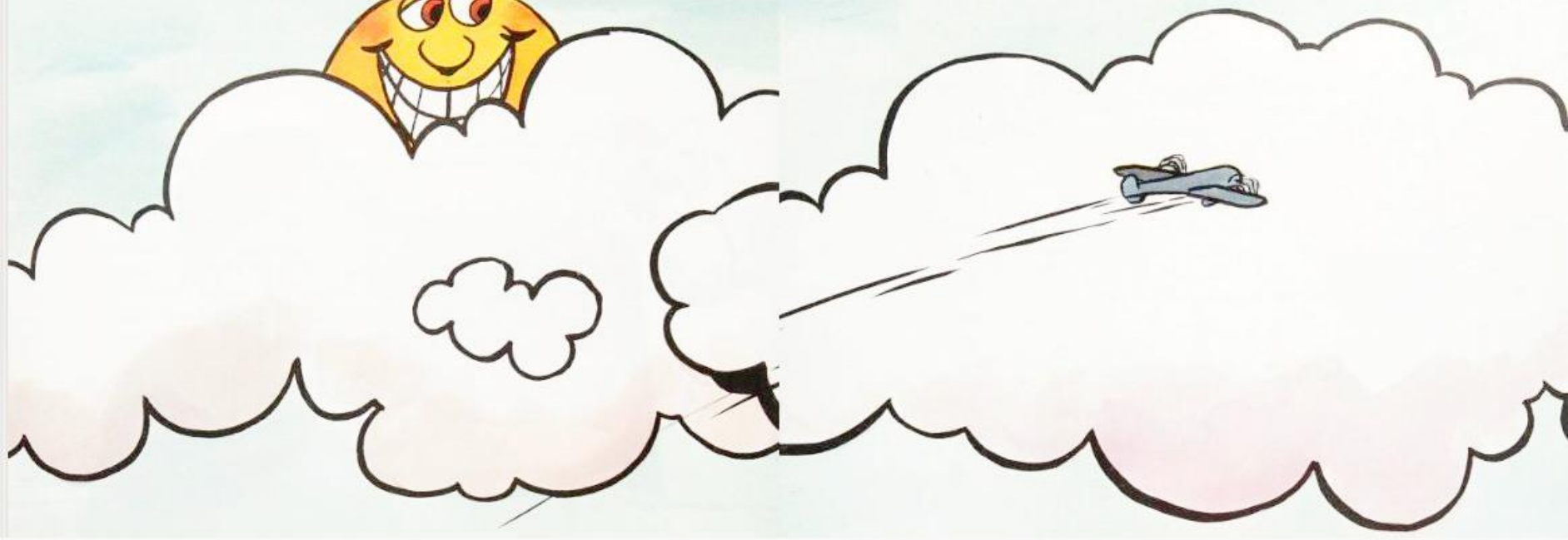

"मैं उन्हें छोड़ थोड़ी रहा हूँ। हमारे सहायक इस काम को आगे बढ़ाएंगे। और तुम व मैं एक ऐसे देश में जा रहे हैं जहाँ यहाँ से हज़ार गुना ज़्यादा दुख-तकलीफ है।"

"क्या हम जापान लौट रहे हैं? अरे बेचारे तुम! तुम्हें फ़िर से चॉपस्टिक से चावल खाने पड़ेंगे और खौलते पानी के टब में नहाना पड़ेगा!" पोपोल ने ठिठियाते कहा।

"नहीं पोपोल, इस बार हम अफ्रीका में कैमरून जा रहे हैं।"

"क्या वह सुन्दर जगह है?"

"बेहद खूबसूरत मुल्क है। पर वहाँ हज़ारों-हज़ार लोग भुखमरी और कोढ़ से पीड़ित हैं।"

"कोढ़? वह क्या होता है?"

"कोढ़ बहुत ही भयंकर बीमारी है, वह भी छूत की। मतलब वह एक से दूसरे इन्सान में फैलती है। गरीब लोग अक्सर इसकी चपेट में आ जाते हैं। जिन्हें होती है उनके पूरे शरीर पर चकत्ते उभर आते हैं। वे अपने हाथ या पैर तक खो सकते हैं।"

अपने चहेते कार्डिनल को हवाई जहाज़ में सवार होते देख मोंट्रियाल के बाशिन्दे रो पड़े। पर अपने दुख के बावजूद वे जानते थे कि वे महान इन्सान हैं। वे समझ गए कि उनकी रहमत ही उन्हें कोढ़ियों की सेवा करने ले जा रही थी।

"यह रक़म रख लीजिए," एक प्रवक्ता ने पॉल-एमील को एक मोटा लिफ़ाफ़ा पकड़ाते हुए कहा। "जब आप कोढ़ियों के लिए अस्पताल बनवाएं, तो हमें भी याद कीजिएगा।"

पॉल-एमील ने किसी तरह अपने आँसुओं पर क़ाबू किया और जहाज़ में जा बैठे। पोपोल ने गला खंखार कर कहा, "कम से कम बीमारी जैसी बुरी चीज़ें ही छूत की तरह नहीं फैलतीं। रहमत जैसी अच्छी चीज़ें भी छूत की तरह फैलती हैं।"

घंटों हवा में उड़ने के बाद जहाज़ याउंडे उतरा। यह सात पहाड़ों का शहर था और कैमरून की राजधानी भी। पॉल-एमील ने अचरज से शहर को घेरने वाले धान और केलों के खेतों को देखा।

"यह अफ्रीका का दिल है," उन्होंने पोपोल से कहा।

यहाँ जो ज़िन्दगी उनका इन्तज़ार कर रही थी, वह बिलकुल फर्क होने वाली थी। यहाँ मोंट्रियाल जैसा शाही घर नहीं था। उन्हें बुश (जंगल) में एक ट्रेलर में रहना था। भड़कीले लाल परिधान भी नहीं थे, अफ्रीका के मिशनरी लम्बे सफ़ेद चोंगे पहनते थे।

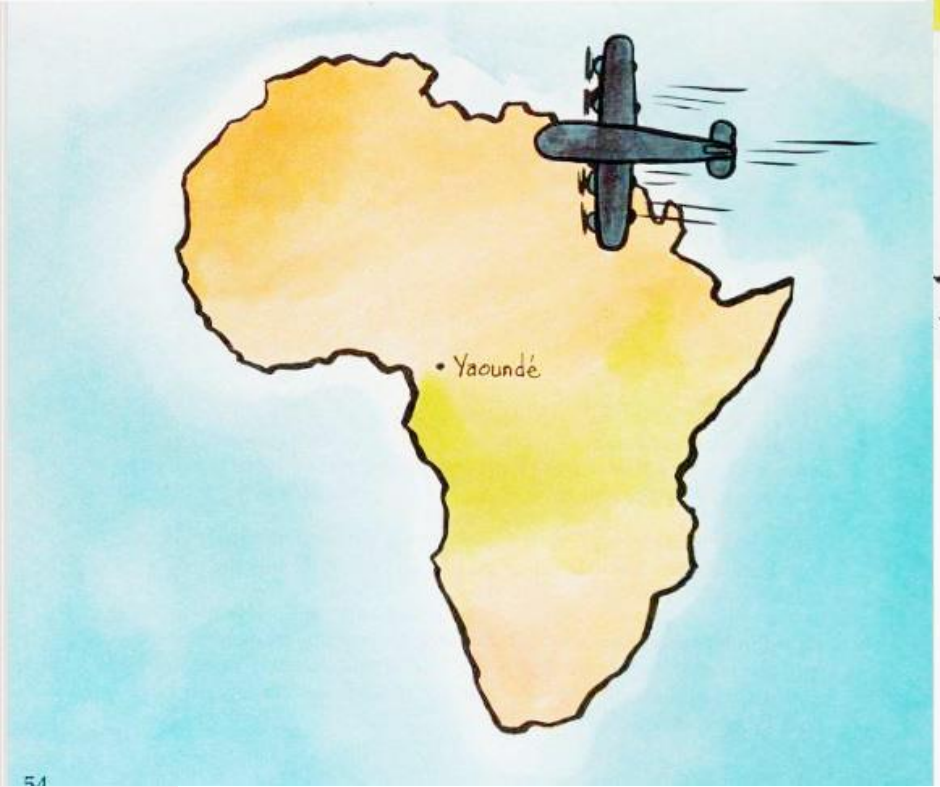

कार्डिनल हर दिन कोढ़ियों के अस्पताल का चक्कर लगाते, जो लैप्रोसेरियम कहलाता था और उनकी देखरेख में बनवाया जा रहा था। एक सुबह अपने ट्रेलर से निकलने पर उन्होंने एक छोटे, मुरझाए से लड़के को दरवाज़े के पास देखा। जैसे ही बच्चे की नज़र पॉल-एमील पर पड़ी, वह मुड़ा और खुद को उनकी तरफ़ घसीटने लगा।

"तुम्हारा नाम क्या है बच्चे?" पॉल-एमील ने उसके पास जा पूछा।

"निकम्मा," उसने जवाब दिया। "पर लोग मुझे 'नाग छोकरा' भी कहते हैं, मैं चलता नहीं घिसटता हूँ ना। असल में मेरे पैरों में दम ही नहीं हैं।"

''क्या तुम स्कूल नहीं जाते?'' कार्डिनल ने पूछा।

''ना! जो बच्चे चल नहीं सकते उन्हें स्कूल जाने की मनाही है।''

''ख़ैर! मैं एक वादा करता हूँ नन्हे निकम्मे। तुम जल्द ही स्कूल जाने लगोगे, जैसे दुनिया भर के बच्चे जाते हैं।''

''लगता है पॉल-एमील एक नई योजना बना रहे हैं,'' पोपोल ने यह दृश्य देख अटकल लगाई।

और वह राज़ जानने के लिए पॉल-एमील के साथ जीप में सवार हो गया।

''तो अब?'' उसने जानना चाहा।

''मुझे लगता है कि अगर इन अपाहिज बच्चों को डॉक्टरों की मदद मिले तो उनमें से कुछ ठीक भी हो सकते हैं। पर इस काम में सरकार को मेरी मदद करनी होगी।''

कुछ ही समय बाद वे अपनी योजना कैमरून के राष्ट्रपति अहमद अहिजो को समझा रहे थे। ''मैं अपाहिज बच्चों के इलाज और देखभाल के लिए एक केन्द्र बनाना चाहता हूँ।''

राष्ट्रपति को ख़याल बहुत ही पसन्द आया। ''मैं जितनी हो सके उतनी मदद करूँगा,'' उन्होंने वादा किया।

अफ़्रीकी कामगारों ने एक लम्बी, नीची इमारत बनाई जो रोशन और हवादार थी। उसके चारों ओर रोएंदार मिमोसा के खुशबूदार पेड़ों का बाग था। इमारत तैयार होने पर पॉल-एमील ने डॉक्टर और नर्सों को तैनात किया।

निकम्मा केन्द्र का पहला मरीज़ बना। डॉक्टरों ने उसके पैरों को सहारा देने के लिए ब्रेस लगाए।

''मुझे पता ही नहीं था कि मैं इतना लम्बा हूँ,'' नन्हा सीधे खड़े हो गमक कर बोला।

पॉल-एमील निकम्मे को किए अपने वादे को नहीं भूले। उन्होंने केन्द्र के लिए एक अफ्रीकी शिक्षक तलाशा। वह केन्द्र के सभी बच्चों को पढ़ना, लिखना और गणित सिखाने लगा।

साथ ही निकम्मा अपने पैरों का इस्तमाल करना भी सीख रहा था। नर्स ने उसे कुछ कसरतें सिखाईं ताकि उसके पैरों की मांसपेशियाँ मज़बूत हों सकें। जल्द ही वह कुछ कदम चलने लगा।

"देखा मैं कितने अच्छे से चल लेता हूँ?" उसने एक रोज़ कार्डिनल से कहा।

"हाँ तुम पहले से काफ़ी बेहतर हो गए हो। इतने बेहतर कि तुम अब घर लौट अपने गाँव के स्कूल में भी पढ़ सकते हो।"

"पर आपको छोड़ने पर मुझे बहुत अफ़सोस होगा।"

"अफ़सोस तो मुझे भी होगा। पर हमें दूसरे अपाहिज बच्चों के बारे में भी सोचना चाहिए, जो यहाँ मदद मिलने की राह तक रहे हैं।"

सो निकम्मे ने लौटने की तैयारी की। पर जाने से पहले वह एक अहसान और चाहता था...।

"बेशक," कार्डिलन ने जवाब दिया। क्या तुमने अपने लिए कोई नाम चुन रखा है? क्योंकि तुम अब निकम्मा तो नहीं कहला सकते।"

छोटे लड़के ने हाँ में सिर हिलाया। "मैं पॉल-एमील कहलाना चाहूँगा।"

बपतिस्मा (ईसाई धर्म में दीक्षित होने की रस्म) के बाद पोपोल नए पॉल-एमील के रखवाले फ़रिश्ते से हाथ मिलाने गया।

"लगता है तुम्हें भी पोपोल ही बुलाया जाएगा," वह मुस्काते हुए बोला।

क़ाफ़ी देर हो चुकी थी। नन्हे पॉल-एमील को निकलना था, ताकि रात होने के पहले वह घर पहुँच सके। कार्डिनल लेजे ने उसे लाल माटी पर धीमे-धीमे बढ़ते देखा। अपने पाँवों की नई पाई ताक़त पर उसे फ़क्र था।

''अपना वादा न भूलना,'' कार्डिनल ने पीछे से हाँक लगा कहा।

''कभी नहीं भूलूंगा,'' पहले के निकम्मे पर अब पॉल-एमील ने कहा। ''हर रात सोने से पहले मैं ख़ुद से पूछूंगा 'क्या आज मैंने दूसरों के लिए कुछ किया है?' ''

निकम्मे की ही तरह सैंकड़ों अपाहिज बच्चों ने केन्द्र में चलना सीखा। कई दूसरों ने पहिएदार गाड़ियाँ या बैसाखियों का इस्तमाल करना सीखा। ज़ाहिर है सभी अपाहिज पूरी तरह ठीक नहीं हो सकते। पर दूसरों से इतना ध्यान और स्नेह पा वे अपनी दूसरी क़ाबलियतों को पनपा तो सकते हैं।

पूरी दुनिया को कार्डिनल लेजे के अपाहिज बच्चों के पुनर्वास और शिक्षण केन्द्र पर नाज़ था। कैमरून उनका शुक्रगुज़ार था। उन्हें कैमरून गणतंत्र का कमांडर ऑफ वैल्यू एण्ड मैरिट घोषित किया गया। कनाडा के संयुक्त राष्ट्र संघ एसोसिएशन ने उन्हें लैस्टर बी. पीयरसन पुरस्कार से नवाज़ा। यह पुरस्कार उन्हें दिया जाता है जिन्होंने शान्ति के लिए काम किया हो।

पॉल-एमील को इन सम्मानों को पा बेशक ख़ुशी हुई। पर इससे बड़ी ख़ुशी उन्हें यह देख कर होती थी कि अपाहिज बच्चों की देखभाल की जा रही थी। और कई बच्चे ठीक भी हो रहे थे।

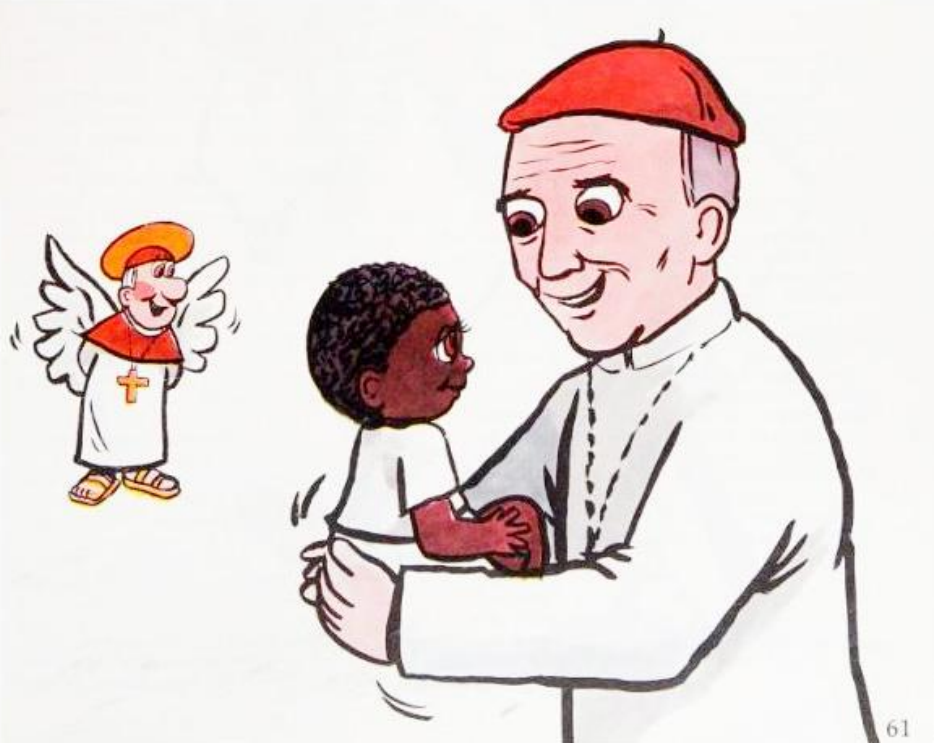

ज़ाहिर है हम सब मिशनरी नहीं बन सकते। हम पॉल-एमील की तरह अपना पूरा जीवन लाचार लोगों की मदद में नहीं लगा सकते। पर हम सब ऐसे लोगों को जानते हैं जो अकेले हैं, जिन्हें एक अदद मुस्कान की ज़रूरत है। या हम अपाहिजों को जानते हैं जिन्हें कुछ मदद चाहिए। या अभागों को जानते हैं, जो सिर्फ़ प्यार के भूखे हैं। हम ऐसे लोगों के लिए कुछ करने की कोशिश तो कर ही सकते हैं। यह भी रहमत ही है।

रहमत के अभ्यास ने पॉल-एमील को बेइन्तहा खुशी दी। सोच कर देखिए कि दूसरों की मदद करना आपको किस तरह की खुशी दे सकता है।

पॉल-एमील लेजे: ऐतिहासिक तथ्य

पॉल-एमील लेजे का जन्म 25 अप्रेल 1904 को दक्षिण-पश्चिमी क्युबैक स्थित वेकफील्ड में हुआ था। वे अपने माता-पिता के दो बच्चों में बड़े थे (उनका भाई जूल्स एक दिन कनाडा का इक्कीसवाँ गवर्नर-जनरल बनने वाला था)। पॉल-एमील के जन्म के कुछ ही समय बाद परिवार एनिसेट रहने लगा जो क़रीब तीस किलोमीटर दूर था। वहाँ उनके पिता एक दुकान चलाते थे।

स्कूल के बाद पॉल-एमील पिता की दुकान में मदद करते थे। शाम को वे सीढ़ियों पर बैठते और गाँव के बड़े-बुज़ुर्गों की बातें सुनते, जब वे अलाव के गिर्द अपनी झूला-कुर्सियों पर बैठ पाइप के कश खींचते किस्से सुनाते।

धर्म में उनकी रुचि उनकी नानी ने जगाई। वे कैथलिक पंथ के विचारों को सरल लफ्ज़ों में समझातीं। उनका एक-एक शब्द पॉल-एमील की स्मृति में हमेशा के लिए खुद गया।

बारह बरस की उम्र में पॉल-एमील सेंट थेरेसा सेमिनरी में पढ़ने गए, जो घर से काफ़ी दूर था। पर जल्द ही बीमारी ने उन्हें स्कूल छोड़ने को मजबूर कर दिया। पूरी तरह स्वस्थ होने में उन्हें साल भर लग गया। इस बीच उन्हें लगने लगा कि मिशनरी बनने का उनका सपना कभी पूरा न हो सकेगा। पर उसी वर्ष मध्यरात्रि को होने वाली क्रिसमस प्रार्थना के दौरान उन्होंने एक आवाज़ सुनी, जिसने कहा, "तुम पादरी बनोगे!"

सेहत वापस पा पॉल-एमील ने अपना शास्त्रीय अध्ययन पूरा किया और तब मोंट्रियाल की ग्रैण्ड सेमिनरी में चार वर्ष के धर्मशास्त्र के पाठ्यक्रम से जुड़े। 25 मई 1929 को उन्हें पादरी बनाया गया। तब वे धर्म सिद्धान्त का अध्ययन करने पेरिस गए और वहीं *इसी ले मोलिनो* की सेमिनरी में अध्यापन भी किया।

1937 में आख़िरकार उनका सपना पूरा हुआ। उन्हें मिशनरी के रूप में फुकुओका जापान भेजा गया। छह महीनों में उन्होंने इतनी जापानी सीख ली कि वे धर्म की बुनियादी शिक्षा और प्रवचन दे सकें। वहाँ उन्होंने एक सेमिनरी की स्थापना की। पर तब दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया और उन्हें वापस लौटना पड़ा।

कनाडा में फादर लेजे को वैलीफील्ड इलाके का पादरी बनाया गया। अगले कुछ वर्षों में एक प्रेरणादायी वक्ता के रूप में उनकी साख बनी। 1947 के अंतिम रविवार को उन्होंने अपने गिरजे के लोगों को बताया कि वे इटली जा रहे हैं। वहाँ उन्हें कनाडा के युवा पादरियों के कॉलेज का रैक्टर बनाया गया था। रैक्टर के दायित्वों के साथ उन्होंने वैटिकन में कनाडा के राष्ट्रदूत की ज़िम्मेदारी भी निभाई।

इटली विश्व युद्ध के दौरान तहस-नहस हो चुका था। हर जगह चीथड़ों में लिपटे बच्चे खाने की भीख मांगते भटका करते थे। पॉल-एमील से यह यातना सहन न हो सकी।

उन्होंने एक अपील लिखी और कनाडा के निवासियों ने दिल खोल कर खाद्य सामग्री, कपड़े और दवाएं भेजीं। उनकी इन कोशिशें ने पोप पायस बारहवें को अविभूत किया और दोनों में गहरी मित्रता हो गई।

1940 में पोप पायस ने पॉल-एमील को मोंट्रियाल का आर्चबिशप नियुक्त किया। जिस पल से उन्होंने यह नई ज़िम्मेदारी संभाली उन्होंने ग़रीबी के ख़िलाफ जंग छेड़ दी। उन्होंने 'चैरिटी हाउस' की स्थापना की, जो अर्से से बीमार लोगों का आवास था। वृद्ध और परिवारहीन लोगों के लिए उन्होंने सेंट चार्ल्स बोरोमे अस्पताल शुरू किया। बाद में उन्होंने बाल अपराधियों, वृद्ध महिलाओं और अनाथों के मसले पर ध्यान दिया। उन्होंने स्वयंसेवकों की टोलियाँ बनाईं जो इमारतों का निर्माण और मरम्मत करती थीं ताकि बेघर ग़रीब उनमें रह सकें।

12 जनवरी 1953 को पोप पायस ने आर्चबिशप लेजे को कार्डिनल का पद दिया। मोंट्रियाल के बाशिन्दे अपने ही व्यक्ति को सबसे युवा कार्डिनल बनते देख बेहद खुश हुए। उन्होंने उनके सम्मान में पूरे शहर की सजावट की।

अठारह वर्षों तक पूरी निष्ठा से मोंट्रियाल की सेवा करने के बाद 'ग़रीबों के कार्डिनल' ने फिर से मिशनरी बनने के लिए शहर छोड़ा। इस बार उन्होंने अफ्रीका के कोढ़ियों के लिए कुछ करने का फ़ैसला किया था, सो वे कैमरून के लिए निकले। अगले कुछ वर्षों में उन्होंने वहाँ 82 लैप्रोसियम (कोढ़ियों के इलाज का केन्द्र) की स्थापना की और उन्हें चलाने के लिए वित्त की व्यवस्था की। पर उनका सबसे महत्वपूर्ण काम था कैमरून की राजधानी याउंडे में विकलांग बच्चों के पुनर्वास केन्द्र की स्थापना। दूर-दूर से माता-पिता अपने पोलियोग्रस्त बच्चों को केन्द्र में लाते जहाँ उनकी चिकित्सकीय देखभाल, फ़िज़ियोथेरेपी और शिक्षा की व्यवस्था थी।

केन्द्र के पास ही एक साधारण ट्रेलर में रहते हुए कार्डिनल लेजे उन पर आश्रित नन्हों की निगहबानी करते। उन्होंने पोलियो के रोकथाम का अभियान भी शुरू किया।

1979 में पॉल-एमील स्थाई रूप से रहने मोंट्रियाल लौट आए। उन्होंने अपना समय तीसरी दुनिया के देशों में हो रहे धर्मार्थ कामों के लिए वित्त इकट्ठा करने में लगाया। वे हर साल अफ्रीका लौटते रहे जहाँ उनके दिल का एक टुकड़ा बसा था। 13 नवम्बर 1991 में उनका देहान्त हुआ।